[श्री तरुण विजय]

"देहि सिवा बर मोहि इहै, सुभ करमन ते कबहूं न टरौं।
न डरौं अरि सौं जब जाई लरौं, निसचै करि अपनी जीत करौं।
अरु सिख हों अपने ही मन कौ, इह लालच हउ गुन तउ उचरौं।
जब आव की अउध निदान बनै, अति ही रन में तब जूझ मरौं।"

राष्ट्रीयता एवं भारत की सनातन विजयशाली परम्परा का प्रतीक यह महान गीत वास्तव में वर्तमान परिदृश्य में भारतीय युवाओं के हृदय में अप्रतिम शौर्य, पराक्रम, साहस, तूफानी उत्साह, उमंग, शत्रु पर विजय प्राप्त करने का बल तथा श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए जीवन अर्पित करने का संकल्प पैदा करता है।

सुन्दर, सरल ब्रज भाषा में रचित यह शब्द केवल गीत नहीं, बल्कि भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति, सनातन मूल्यों की विजय का ध्वजवाहक उद्घोष है, जो कोटि-कोटि कंठों से गुंजित होकर समाज में राष्ट्रीयता का नया ज्वार एवं नवीन प्राण भरता है।

मेरी मांग है कि इस अमर कृति को भारत का राष्ट्रीय युवा गीत घोषित किया जाए तथा प्रत्येक राष्ट्रीय कार्यक्रम के प्रारंभ में, विशेषकर राष्ट्रपति भवन में होने वाले सैन्य एवं नागरिक सम्मान अलंकरण समारोहों के प्रारंभ में तथा भारतीय सेना के तीनों अंगों के विशिष्ट सैन्य समारोहों के प्रारंभ में इस गीत का गायन अनिवार्य किया जाए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Mansukh Mandaviya, not present; Shri Motilal Vora, not present; Shrimati Smriti Irani, not present; Shri Govardhan Reddy, not present; Shri Praveen Rashtrapal, not present; Shri Avinash Rai Khanna, not present.

*Demand to take immediate steps to prepare statistics on rivers and make them pollution free

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश) : महोदय, हिन्दुस्तान पूरी दुनिया में गंगा-जमुनी संस्कृति के नाम से प्रसिद्ध है। मेरी जानकारी के तहत हमारा वतन दुनिया का पहला ऐसा मुल्क है, जो नदियों के नाम से अपनी तहज़ीब और तारीख का ऐलान करता है। मैं आपके माध्यम से देश की सरकार से नदियों में बढ़ते हुए प्रदूषण और अतिक्रमण के प्रति संवेदनशील होने की गुज़ारिश करता हूं। मैं सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि सबसे पहले देश को तमाम जात-पात और धर्म से ऊपर उठ कर एकता और इंसानियत की डोर से बांधे रखने वाली नदियों की गणना करायी जाए, फिर उनके क्षेत्रफल का सीमांकन कराया जाए तथा नदियों को अवैध कब्ज़ों से मुक्त कराते हुए उन कल-कारखानों के लाइसेंस निरस्त किये जाएं, जो अपने वेस्ट मैटीरियल से निदयों को प्रदूषित कर रहे हैं।

माननीय महोदय, मैं खुद भी बेतवा के अंचल में परवरिश पा कर बड़ा हुआ हूं, इसलिए नदियों के साथ होने वाले जुल्म को मैं बहुत गहराई से जानता हूं और मैं सरकार से उम्मीद करता हूं कि मेरे द्वारा उठाये गये सवालों के प्रति वह गंभीर होगी।

---

*Laid on the Table of the House.

महोदय, मैं भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि जब जल आसमान से बरसता है, तो रहमत होता है, जब ज़मीन पर नदियों और तालाबों के रूप में बहता है, तो ज़िन्दगी होता है, जब शंकर जी की जटाओं से निकलता है, तब गंगा-जल के रूप में पूजनीय हो जाता है और जब हज़रत इस्माईल अल्हेससलाम की एड़ियों से निकलता है, तब आब-ए-ज़मज़म के रूप में तबर्रुक हो जाता है। इसलिए, इस जल की रक्षा हमारा नैतिक दायित्व है। उम्मीद है कि सरकार मेरी मांगों पर अविलम्ब कार्यवाही आरंभ करेगी। धन्यवाद।

†[**چودھری منوّر سلیم (اترپردیش) :** مہودے، ہندوستان پوری دنیا میں گنگا جمنی سنسکرتی کے نام سے پرسدّھ ہے۔ میری جانکاری کے تحت ہمارا وطن دنیا کا پہلا ایسا ملک ہے، جو ندیوں کے نام سے اپنی تہذیب اور تاریخ کا اعلان کرتا ہے۔ میں آپ کے مادھیم سے دیش کی سرکار سے ندیوں میں بڑھتے ہوئے پردوشن اور انی-کرمن کے پرتی سنویدن-شیل ہونے کی گزارش کرتا ہوں۔ میں سرکار سے انورودھ کرنا چاہتا ہوں کہ سب سے پہلے دیش کو تمام ذات-پات اور دھرم سے اوپر اٹھ کر ایکتا اور انسانیت کی ڈور سے باندھے رکھنے والی ندیوں کی گنتی کرائی جائے، پھر ان کے شیترپھل کا سیمانکن کرایا جائے اور ندیوں کو اویدھ قبضوں سے مکت کراتے ہوئے ان کل-کارخانوں کے لائسنس نرست کئے جائیں، جو اپنے ویسٹ مٹیریل سے ندیوں کو پردوشت کر رہے ہیں۔

مانّئے مہودے، میں خود بھی بیتوا کے انچل میں پرورش پاکر بڑا ہوا ہوں، اس لئے ندیوں کے ساتھ ہونے والے ظلم کو میں بہت گہرائی سے جانتا ہوں اور میں سرکار سے امّید کرتا ہوں کہ میرے دوارا اٹھائے گئے سوالوں کے پرتی وہ گمبھیر ہوگی۔

مہودے، میں بھارت سرکار سے کہنا چاہتا ہوں کہ جب پانی آسمان سے برستا ہے، تو رحمت ہوتا ہے۔ جب زمین پر ندیوں اور تالابوں کے روپ میں بہتا ہے، تو زندگی ہوتا ہے۔ جب شنکر جی کی جٹاؤں سے نکلتا ہے، تب گنگا جل کے روپ میں پوجنئے ہو جاتا ہے اور جب حضرت اسماعیل علیہ السّلام کی ایڑھیوں سے نکلتا ہے، تب آب زم-زم کے روپ میں تبرّخ ہو جاتا ہے۔ اس لئے، اس جل کی رکشا ہمارا نیتک دائتو ہے۔ امّید ہے کہ سرکار میری مانگوں پر بلا رکاوٹ کاروائی شروع کرے گی۔ دھنیواد۔]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Dilip Kumar Tirkey, not present; Dr. R. Lakshmanan, not present; Shri K.N. Balagopal, not present.

---

†[Transliteration in Urdu Script]